《 फिर्कावारियत से बचकर, सिर्फ़ "कुरआन और सहीउल असनाद अहादीस" को हुज्जत व दलील मानने, और झूटी, बे सनद और "ज़ईफ़उल असनाद तारीख़ी रिवायात" के फ़ितनों से बचने वालों के लिए 》

①

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

Research Paper 5a

10 محرم الحرام 1437ھ

राफ़ज़ियत, नासबियत और यज़ीदियत का तहकीकी जायज़ा

24 October 2015

यज़ीदियत: यजीद बिन मुआविया के झूठे फजाइल बयान करना।

नासबियत: सय्यदना अली ؓ का बुग्ज़ और उनकी गुस्ताखियाँ करना

राफज़ियत: सहाबा किराम ؓ का बुग्ज़ और उनकी गुस्ताखियाँ करना।

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद **अपनी मौत से पहलें पहलें** सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर **लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!**

यह अहम तहकीक सिर्फ "कुरआन और सहीह अहादीस" पर मुशतमिल है:

अलहम्दुलिल्लाह ﷻ! इस तहरीर में राफज़ियत नासबियत और यज़ीदियत जैसी मुहलक रुहानी बीमारियों का इलाज सिर्फ कुरआन और सहीह अहादीस से किया जा रहा है। रही हक़ीक़त तारीख तबरी, तारीख इब्ने असाकिर, तारीख इब्ने कसीर और तारीख इब्ने खल्लदून के चन्द बे सनद, ज़ईफ़ व मनगढ़ंत वाकिआत और बे बुनियाद रिवायात की, तो अक्ल रखने वालों के लिये सिर्फ इतना अर्ज कर देना काफी है कि मुहद्दिसीन-ए-इजाम के इल्मी मैदान में इन झूठे तारीखी हवालों की हैसियत खोटे सिक्कों की मानिन्द है।

नोट: अल्लाह ﷻ के महबूब, हमारें निहायत ही शफीक़ आक़ा, इमामे आज़म, इमामे कायीनात सय्यिदुल अव्वलीन वल आखिरीन, इमामु अंबिया वल मुर्सलीन, शफ़िउल मुज्नबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ **की तमाम सहीह अहादीस के नंबर्स उलेमा-ए-हरमैन और बैरुत की जारी शुदा इंटरनेशनल नम्बरिंग के मुताबिक हैं।** और इस तहरीर में सिर्फ वही अहादीस शामिल हैं जिनके सही होने पर बर्रे सगीर पाक व हिन्द में **"अहले सुन्नत"** का दावा करने वाले तीनों मसालिक: Ⅰ बरेल्वी Ⅱ देओबंदी और Ⅲ सलफी (अहले हदीस) बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ करते हैं।

नोट: अल्लाह ﷻ ने उलेमा और दर्वेशों की तालीमात के बजाय अपनी वहीह (कुरआन और उसकी तफ्सीर यानी सहीह अहादीस) की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी खुद ली है: [سورۃُ الحجر: آیت نمبر 9] (सुरहतुल हिज्र: आयत न॰ 9)

नोट: "इज्मा-ए-उम्मत" को हुज्जत मानना दरअसल कुरआन व सहीह अहादीस का हुक्म मानने में ही दाखिल है: [النساء : 115] ، [المُستدرک لِلحاکم : حدیث نمبر 399] (सुरहतुल निसा: 115), अलमुस्तदरक लिल हाकिम: हदीस न॰ 399)

अगर कुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत की मुखालिफ़त ना आये तो जदीद मसाइल के हल के लिये "कयास या इज्तिहाद" करना जायज है: [المُصنف لابن ابی شیبة : حدیث نمبر 22,990] (अलमुसन्नफ लिइब्ने अबी शैबह: हदीस न॰ 22, 990)

राफ़ज़ियत का रद्द: अल्लाह ﷻ के महबूब ﷺ के "तमाम सहाबा ؓ" काबिल-ए-एहतराम हैं:

अल्लाह ﷻ ने कुरआने हकीम में वाजेह तौर पर इर्शाद फरमाया:

① مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِىْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ ۖۛ وَمَثَلُهُمْ فِى الْاِنْجِيْلِ ………… ○ [سورۃُ الفتح : آیت نمبر 29] (सुरहतुल फतह: आयत न॰ 29)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "मुहम्मद ﷺ के रसूल हैं और जो लोग उनके साथी हैं (ये तमाम हस्तियाँ) काफिरों पर (मुक़ाबिले में) बड़े सख्त (बहादुर) और आपस में बड़े रहमदिल हैं, तुम उन्हें देखोगे भी (तो) रकूउ करते हुए (और) कभी सज्दा (की हालत) में, (इन अच्छे आमाल से वो) अल्लाह ﷻ के फज्ल और उसकी रजा के तलबगार रहते हैं, उन (की इबादत) की अलामात उनके चेहरों पर सज्दों के असर से नुमायाँ है, उन (रसूल ﷺ और तमाम सहाबा ؓ) के ये औसाफ तौरात में (भी) हैं और उनकी यह मिसाल इन्जील में (भी) मौजूद है"।

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद खुदरी ؓ का बयान है कि सय्यिदना खालिद बिन वलीद ؓ ने सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ ؓ को झगड़े के दौरान गाली दे दी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने खालिद ؓ से इर्शाद फरमाया: "तुम मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, अगर अब तुम (बाद में इस्लाम लाने वालें) में से कोई शख्स उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर डाले तो भी वह उन (पहले मुसलमानों) में से किसी एक के मुद (तकरीबन 600 ग्राम) खर्च करने को नहीं पहुंच सकता है, ना ही उसके आधे को"। [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3673 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 6488] (सहीह बुखारी: हदीस न॰ 3673, सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 6488)

③ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सईद बिन जैद ؓ कूफ़ा की बड़ी मस्जिद में सय्यिदना मुगीरह बिन शौबा ؓ को (जो सय्यिदना मुआविया ؓ की तरफ से गवर्नर कूफा मुकर्रर थे) मिलने आये। कुछ देर बाद कैस बिन अलकमा वहाँ आया तो सय्यिदना मुगीरह ने उसका इस्तिकबाल किया। फिर मस्जिद में उसी कैस ने सय्यिदना अली ؓ को गालियाँ दीं तो सय्यिदना सईद ؓ ने सय्यिदना मुगीरह ؓ को 3- बार नाम लेकर डांटा और फरमाया कि तुम सहाबी की मज्लिस के लोग नबी ﷺ के सहाबी सय्यिदना अली ؓ को गालियाँ दीं और ना तो तुम उनको मना करो और ना ही उनको अपनी मज्लिस से निकालो जबकि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने खुद नबी ﷺ से सुना कि अबु बकर, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ, सअद बिन अबी वक़ास ؓ और एक नवाँ भी जन्नत मे हैं। अहले मस्जिद ने अल्लाह ﷻ की कसम देकर ब आवाज़-ए-बुलन्द पूछा कि नवाँ कौन है? तो फरमाया अल्लाह ﷻ का नाम बहुत बड़ा है, वह नवाँ आदमी मैं हूँ और दसवें खुद नबी ﷺ हैं। फिर सय्यिदना सईद ؓ ने फरमाया अल्लाह ﷻ की कसम जो शख्स नबी ﷺ के साथ किसी एक गजवे में भी शरीक हुआ और उसका चेहरा गुबार आलूद हुवा तो उसका यह अमल तुम लोगों के हर अमल से अफज़ल है ख्वा तुम्हें सय्यिदना नूह ؑ जितनी लम्बी उमर ही क्यों ना मिल जाए"।

[سُنن ابی داوٗد : حدیث نمبر 4650 ، مُسندِاحمد : حدیث نمبر 1629، 187/1] (सुनन अबी दाऊद: हदीस न॰ 4650, मुस्नद अहमद: हदीस न॰ 1629, 187{1})

④ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फिया ؒ बयान करते हैं कि मैंने अपने वालिद (अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ से सवाल किया: (इस उम्मत में) रसूलुल्लाह ﷺ के बाद कौन शख्स लोगों में सबसे अफजल है? उन्होंने फरमाया "सय्यिदना अबु बकर ؓ" मैंने पूछा उनके बाद कौन? "सय्यिदना उमर ؓ।" "फिर मुझे खदशा हुवा कि आप ؓ सय्यिदना उसमान ؓ का नाम लेंगे इसलिये मैंने कहा तो फिर आप ही हैं? तो आप ؓ ने (बतौर इंकिसारी से) इर्शाद फरमाया: मैं तो आम मुसलमानों में से एक आम आदमी हूँ"। [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3671] (सहीह बुखारी: हदीस न॰ 3671)

नासबियत का रद्द: चौथे खलीफ़ा सय्यिदना अली ؓ के "फजाइल-व-मनाकिब"

अल्लाह ﷻ के महबूब ﷺ की इसी जिम्न में चन्द सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाऐं:

① **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सअद बिन अबी वक़ास ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली ؓ को गजवा-ए-तबूक के मौके पर इर्शाद फरमाया: "तुम्हारी मेरे साथ वही मन्जिलत है जो सय्यिदना हारुन ؑ को सय्यिदना मूसा ؑ से थी मगर यह कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है"। (सहीह बुखारी: हदीस न॰ 3706, सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 6217) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3706 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 6217]

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सहल बिन सअद ؓ कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने गजवा-ए-खैबर के मौके पर इर्शाद फरमाया: "मैं कल जरुर उस शख्स को झंडा दूंगा, जिसके हाथ पर अल्लाह ﷻ फतह देगा, वह शख्स अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत करता है और अल्लाह ﷻ और उसका रसूल ﷺ उस से मुहब्बत करते हैं। जब सुबह हुई तो तमाम लोग इस उम्मीद पर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाजिर हुए कि वह झंडा उसे अता किया जाए मगर यह सआदत सय्यिदना अली ؓ के हिस्से में आई"। (सहीह बुखारी: हदीस 3701, सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 6223) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3701 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 6223]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ रिवायत करते हैं: "उस ज़ात की क़सम जिसने दाना फाडा (और फसल उगाई) और मख्लूक़ात पैदा कीं, नबी उम्मी ﷺ ने मुझे यह अहद दिया था कि सिर्फ मौमिन शख्स ही मुझ (अली) से मुहब्बत करेगा, और मुनाफ़िक़ शख्स ही (मुझसे) बुग्ज रखेगा"।

(सहीह मुस्लिम: हदीस न० 240) [صحيح مُسلم : حديث نمبر 240]

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरकम ؓ का बयान है: "पहला शख्स जिसने (बचपन में) इस्लाम कुबूल किया वो सय्यिदना अली ؓ हैं"।

(जामे तिर्मिजी: हदीस न० 3735) [جامع ترمذی : حديث نمبر 3735]

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरकम ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ, उसका मौला (दिली महबूब) अली हैं"।

नोट: الله عزوجل के प्यारे महबूब ﷺ की निस्बत की वजह से सय्यिदना अली ؓ और तमाम सहाबा ؓ से मुहब्बत करना हर मुसलमान के ईमान का तकाजा है।

(जामे तिर्मिजी: हदीस न० 3713) [جامع ترمذی : حديث نمبر 3713]

❻ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सअद बिन अबी वक़ास ؓ का बयान है: "जब आयते मुबाहला (सूरह आले इमरान: आयत न० 61) नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फातिमा, सय्यिदना अली, सय्यिदना हसन ؓ और सय्यिदना हुसैन ؓ को अपने पास बुलाया और फिर الله عزوجل के हुज़ूर अर्ज किया: " الله عزوجل ये मेरे "अहलियत" (अहले बैअत) हैं"।

(सहीह मुस्लिम: हदीस न० 6220) [صحيح مُسلم : حديث نمبر 6220]

❼ **तर्जुमा सहीह हदीस:** उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा رضی الله عنها रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी चादर के नीचे सय्यदा फातिमा, सय्यिदना अली, सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन ؓ को दाखिल फरमाया और फिर यह आयत-ए- मुबारका तिलावत फरमाई :-------

......اِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ٥ [سورةُ الاحزاب : آيت نمبر 33] (सूरतुल अहजाब: आयत न० 33)

तर्जुमा सहीह हदीस: " الله عزوجل सिर्फ यही चाहता है कि ऐ "अहले बैअत" तुम से निजासत दूर करके तुम्हें खूब पाक और सुथरा कर दे"।

(सहीह मुस्लिम: हदीस न० 6261) [صحيح مُسلم : حديث نمبر 6261]

❽ **तर्जुमा सहीह हदीस:** ख़लीफा अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अबु बकर सिद्दीक ؓ ने इर्शाद फरमाया: "मुहम्मद ﷺ के "अहले बैअत" (से मुहब्बत) में आप ﷺ की मुहब्बत को तलाश करो"।

नोट: सुरहतुल अहज़ाब की आयात न० 28 से 33 की रु से बेशक तमाम उम्महातुल मौमिनीन رضی الله عنهن "अहले बैअत" में शामिल हैं।

(सहीह बुखारी: हदीस न० 3751) [صحيح بُخاری : حديث نمبر 3751]

सय्यिदना अली ؓ की "खिलाफ़ते राशिदा" 100% हक पर थी

الله عزوجل के महबूब ﷺ के दामाद अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ की ख़िलाफ़त मनहज-ए- नबुव्वत ﷺ पर थी:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** अमर बिन मैमून ताबई رحمہ الله का बयान है: जब अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना उमर ؓ को जख्मी हालत में शहादत से पहले लोगों ने अपना खलीफ़ा बनाने से मुताल्लिक अर्ज की तो आप ؓ ने इर्शाद फरमाया: मैं इस मामले में इन 6 के अलावा किसी और को ख़िलाफ़त का अहल नहीं समझता कि जिनसे रसूलुल्लाह ﷺ अपनी वफात तक राज़ी रहे फिर आप ؓ ने उनके नाम जिक्र फरमाये: सय्यिदना उस्मान, सय्यिदना अली, सय्यिदना तलहा, सय्यिदना ज़ुबैर, सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सय्यिदना सअद बिन अबी वक़ास ؓ, फिर इन 6 सहाबा ؓ में से 4 दस्तबरदार हो गये और फिर सबने मिलकर 2 बाकी बचने वाले सय्यिदना उस्मान ؓ और सय्यिदना अली ؓ मे से सय्यिदना उस्मान ؓ को चुन लिया। (पस सय्यिदना उस्मान ؓ के बाद ख़िलाफ़त पर सिर्फ सय्यिदना अली ؓ का हक था!) (सहीह बुखारी: हदीस न० 3700) [صحيح بُخاری : حديث نمبر 3700]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सफीना ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "खिलाफ़ते नबुव्वत 30 साल तक रहेगी, फिर जिसे चाहेगा الله عزوجل अपना मुल्क अता फरमायेगा"। फिर सय्यिदना सफीना ؓ ने अपने शागिर्द को खुलफ़ा-ए-राशिदीन की तादाद और मुद्दत गिनकर समझाई: सय्यिदना अबु बकर ؓ के दो साल, सय्यिदना उमर ؓ के 10 साल, सय्यिदना उस्मान ؓ के 12 साल और सय्यिदना अली ؓ के 6 साल। शागिर्द ने अर्ज किया: यह खानदाने उमय्या के लोग समझते हैं कि सय्यिदना अली ؓ खलीफ़ा नहीं थे बल्कि ख़िलाफ़त तो उनमें है। यह बात सुन कर सय्यिदना सफीना ؓ ने फरमाया: "यह बात बनू मरवान (खानदाने उमय्या) की पीठ से निकला हुवा झूठ है, उनकी हुकूमत तो शदीद तरीन बादशाहत है"।

(जामे तिर्मिजी: हदीस न० 2226, सुनन अबी दाऊद: हदीस न० 4646) [جامع ترمذی : حديث نمبر 2226 ، سُنن ابی داؤد : حديث نمبر 4646]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ का बयान है: "मैंने इरादा किया कि मैं सय्यिदना मुआविया ؓ से कहूँ कि आप से ज्यादा ख़िलाफ़त का हक़दार वह (सय्यिदना अली ؓ) हैं, जिन्होंने आप और आपके वालिद رضی الله عنهما से (जब दोनों हालते कुफ़्र में थे) इस्लाम के लिये जंग की थी मगर मैं फित्ना के डर से खामोश हो गया"।

(सहीह बुखारी: हदीस न० 4108) [صحيح بُخاری : حديث نمبر 4108]

सय्यिदना अली ؓ "जमल" और "सिफ्फीन" में हक पर थे:

किसासे सय्यिदना उस्मान ؓ के मामले में इख्तिलाफे राय का पैदा हो जाना इन जंगों का असल सबब बना:

जंग-ए-जमल: ﴿अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ और सय्यिदा आयशा رضی الله عنها के दर्मियान﴾, **जंग-ए- सिफ्फीन:** ﴿ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ और सय्यिदना मुआविया ؓ के दर्मियान﴾

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद खुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "(मेरे बाद) मेरी उम्मत दो गिरोहों में तक्सीम हो जाएगी। (यानी Ⅰ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ और उनके हामी, Ⅱ अमीरुल मौमिनी सय्यिदना अली ؓ के मुखालिफीन और उनके साथी) फिर इन दोनों (मुसलमान) गिरोहों के अन्दर से एक (तीसरा) फिर्का अलग हो जाएगा (यानी ख्वारिज), और इस अलग हो जाने वाले फिर्के से (मुसलमानों का) वह गिरोह किताल करेगा जो उस वक्त हक के ज्यादा करीब तरीन होगा"। (सहीह मुस्लिम: हदीस न० 2459) [صحيح مُسلم : حديث نمبر 2459]

नोट: अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ ने ही ख्वारिज और बागियों को **जंग-ए-नहरवान** में कत्ल किया था:

(सहीह बुखारी: हदीस न० 6933, सही मुस्लिम हदीस न० 2456) [صحيح بُخاری : حديث نمبر 6933 ، صحيح مُسلم : حديث نمبر 2456]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू दर्दा ؓ का बयान है: الله عزوجل ने अपने नबी ﷺ की मुबारक जबान से सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ को शैतान के रास्ते से महफूज रहने की पनाह अता फरमाई है"। (यानी उनकी राय हक पर होगी) (सहीह बुखारी: हदीस न० 3742) [صحيح بُخاری : حديث نمبر 3742]

नोट: सय्यिदना अम्मार ؓ तमाम जंगों में अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ के ही हामी थे:

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** अब्दुल्लाह बिन जियाद अल असदी ताबई رحمہ الله का बयान है: "जब (जंग-ए-जमल के मौके पर) सय्यिदना तलहा, सय्यिदना जुबैर, और उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा ؓ बसरा की जानिब रवाना हुए तो मैंने सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ को कूफ़ा के मिम्बर पर खुत्बा देते हुए सुना: "सय्यिदा आयशा رضی الله عنها बसरा जा रही हैं और الله عزوجل की कसम वह दुनिया और आखिरत में तुम्हारे नबी ﷺ की जौजा (बीवी) हैं।

❸ मगर الله ﷻ ने तुम्हें आजमाया है कि तुम (अमीरुल मौमिनीन के पीछे) الله ﷻ की इताअत करते हो या सय्यिदा आयशा رضی الله عنها की"।
(सहीह बुख़ारी: हदीस न॰ 7100) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 7100]

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना कैस ؓ का बयान है: "(जंग-ए-सिफ्फीन मे) सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ सय्यिदना अली ؓ के हामी थे"।
(सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 7035) [صحیح مُسلم : حدیث نمبر 7035]

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद खुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया : अफ्सोस! अम्मार को एक (इज्तिहादी तौर पर) बाग़ी गिरोह कत्ल करेगा। अम्मार तो उनको الله ﷻ की(इताअत की) जानिब बुलाएगा और वह जमाअत इसको दोजख की जानिब बुलाएगी"।
(सहीह बुख़ारी: हदीस न॰ 2812, सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 7320) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 2812 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 7320]

नोट : जंग-ए-सिफ्फीन मे सय्यिदना अम्मार ؓ , सय्यिदना अली ؓ की तरफ से लड़ते हुए, सय्यिदना मुआविया ؓ के फौजी के हाथों शहीद हुए:
(मुस्नद अहमद: हदीस न॰ 16744, 76/4) [مُسند احمد : حدیث نمبر 16744 ، 76/4]

सय्यिदा आयशा رضی الله عنها और सय्यिदना मुअविया ؓ की गलती "इज्तिहादी" थी :

इस "इन्तिहाई नाज़ुक" मौज़ू पर 2 सहीह अहदीस मुलाहिज़ा फरमायें:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अमर बिन आस ؓ रिवायत करते है की रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "जब कोई हाकिम अपने इज्तिहाद से फ़ैसला करे और सहीह फ़ैसले पर पहुँच जाएँ तो उसे दुगना अज़र मिलता है और अगर वो इज्तिहादी खता कर बैठे तो (भी अच्छी नियत पर) उसके लिए एक अजर है"।(सहीह बुख़ारी: हदीस न॰ 7352, सहीह मुस्लिम:हदीस न॰ 4487) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 7352 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 4487]

नोट: जंग-ए-जमल और जंग-ए-सिफ्फीन में अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ की तरफ से लड़ने वालों को दोगुना और मुखालफीन को भी एक अजर मिलेंगा क्यूँकि दोनों तरफ से शरीक़ सहाबा ؓ "मुज्तहद" थे।

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** हसन बसरी ताबई رحمه الله का बयान है: "जब सय्यिदना हसन बिन अली ؓ सय्यिदना मुआविया ؓ के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए लश्कर लेकर निकले तो सय्यिदना अमर बिन आस ؓ ने सय्यिदना मुआविया ؓ से कहा की मैं अपने हद मुक़ाबिल ऐसा लश्कर देखता हूँ जो उस वक़्त तक वापस न जायेगा जब तक अपने मुखालफीन को भगा न ले..... (मगर सय्यिदना हसन बिन अली ؓ ने फरासत से काम लिया और सय्यिदना मुआविया ؓ से सुलह कर ली तो इस पर) हसन बसरी ताबई رحمه الله ने कहा के मैंने सय्यिदना अबू बकर ؓ से सुना के नबी ﷺ खुतबह दे रहे थे कि वहाँ सय्यिदना हसन बिन अली ؓ आये तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है के الله ﷻ इसके ज़रिए मुसलमानों की दो जमाअतों के दरमियान सुलह करा देगा" । (सहीह बुख़ारी: हदीस नंबर 7109) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 7109]

नोट : अलहम्दुलिल्लाह ﷻ ! नबी ﷺ ने दोनों जमाअतों को मुसलमान फ़रमाया। सय्यिदना हसन ؓ ने अज़ीम क़ुरबानी दी और सय्यिदना मुआविया ؓ से सुलह फरमा कर उनकी बैत करली। यूँ बहम खाना जंग खत्म हुई। अब कोई बदबख्त ही सय्यिदना मुआविया ؓ को गाली देंगा ।हाँ मगर इबरत के लिए इहतराम के साथ सय्यिदना मुआविया ؓ की इज्तेहादी ग़लतियों का बयान करना जाएज़ है और खुद मुहद्दसीन की कियाबों में इसकी मिसालें दी हैं (सहीह बुख़ारी: 4108,4827,2812, सहीह मुस्लिम 4776,4061,6220, जामे तिर्मिजी: 2226,सुनन अबू दाऊद: 4131,4648,4650 सुनन निसाई ,3009)
[صحیح بُخاری : 4108 ، 4827 ، 2812 ، صحیح مُسلم : 4776 ، 4061 ، 6220 ، جامع ترمذی : 2226 ، سُنن ابی داؤد : 4131 ، 4648 ، 4650 ، سُنن نسائی : 3009]

यज़ीदियत का रद्द: मज़लूम-ए-कर्बला सय्यिदना हुसैन ؓ के "फ़ज़ाइल व मनाक़िब"

الله ﷻ के महबूब ﷺ की इसी ज़िम्न में चंद सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएँ।

❶ ❷ ❸ **नोट :** ऊपर बयान करदा ख़लीफा चहारुम (चार) अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली ؓ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में सहीह अहादीस नंबर्स: 6,7,और 8 में सय्यिदना हुसैन ؓ की शख्सियत भी शामिल है।

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "और बेशक (सय्यिदना) हसन और हुसैन (رضی الله عنهما) अहले जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं"। [جامع ترمذی : حدیث نمبر 3781] (जामे तिर्मिजी: हदीस न॰ 3781)

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "हुसैन मुझसे हैं और मैं हुसैन से हूँ। الله ﷻ उस से मुहब्बत करे जो हुसैन से मुहब्बत करता है"। [جامع ترمذی : حدیث نمبر 3775] (जामे तिर्मिजी: हदीस न॰ 3775)

❻ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "ऐ लोगों आगाह हो जाओ! मैं भी इन्सान हूँ, करीब है कि मेरे पास मेरे रब का कासिद (मौत का फ़रिश्ता) आये और मैं उसकी बात कुबूल करलूँ। मैं अपने बाद तुम में दो अज़ीम चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ : Ⅰ पहली चीज़ तो الله ﷻ की किताब है, इसमें हिदायत और नूर है, तुम الله ﷻ की किताब को पकड़ो और उस से ताल्लुक मज़बूत करो । الله ﷻ की किताब الله ﷻ की रस्सी है, जिसने उसकी इत्तिबा की वह हिदायत पर है और जिसने उसे छोड़ दिया वह गुमराह हो गया। Ⅱ और दूसरी चीज मेरे अहले बैअत हैं। मैं अपने अहले बैअत के मुताल्लिक तुम्हें الله ﷻ से डराता हूँ" (यानी उनके साथ अच्छा सुलूक़ करना!)
(सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 6228) [صحیح مُسلم : حدیث نمبر 6228]

सय्यिदना हुसैन ؓ को इराकी कूफी "नज्दियों" ने "शहीद" किया था:

الله ﷻ के महबूब ﷺ की इसी जिम्न में चन्द सहीह अहादीस मुलाहिजा फ़रमाएँ:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** एक दिन सय्यिदना अली ؓ ,नबी की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ को रोते हुए पाया तो आप ﷺ से रोने का सबब पूछा? नबी ﷺ ने फरमाया "अभी मेरे पास से जिब्राईल عليه السلام उठ कर गये हैं, उन्होंने मुझे बताया कि हुसैन(ؓ)को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा"।
(मुस्नद अहमद: हदीस न॰ 648, 85/1) [مُسند احمد : حدیث نمبر 648 ، 85/1]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से किसी इराकी (कूफ़ी नज़्दी) ने पूछा: अगर कोई शख्स एहराम की हालत में मच्छर मार दे तो उसे क्या कफ्फारा देना पड़ेगा? इसके जवाब में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ ने इर्शाद फरमाया: इसे देखो, यह इराक़ी(कूफ़ी नज्दी) मच्छर के खून के बारे में पूछ रहा है, और यह लोग रसूलुल्लाह ﷺ के नवासे को शहीद कर चुके हैं, जिनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया था: "ये दोनों (सय्यिदना हसन और हुसैन رضی الله عنهما) दुनियाँ में मेरे दो फूल हैं"।
(सहीह बुख़ारी: हदीस न॰ 3753) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3753]

नोट : रसूलुल्लाह ﷺ ने इराक़ (नज्द) की तरफ इशारा करते हुए फरमाया : "फित्ना वहाँ से निकलेगा जहाँ से शैतान के सींग निकलेंगे"।
(सहीह मुस्लिम: हदीस न॰ 7297) [صحیح مُسلم : حدیث نمبر 7297]

नोट : रसूलुल्लाह ﷺ ने नज्दियों के हक में दुआ से इन्कार कर दिया और फिर फरमाया: "वहाँ जलजले होंगे और वहाँ से शैतान का सींग निकलेगा"।
(सहीह बुख़ारी: हदीस न॰ 7094) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 7094]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ का बयान है: "एक दिन दोपहर के वक्त मैंने नबी ﷺ को ख्वाब में देखा, आप ﷺ के बाल बिखरे हुवे और गर्द आलूद थे और आप ﷺ के हाथ में खून की एक बोतल थी। मैंने अर्ज किया: मेरे माँ बाप आप ﷺ पर कुर्बान, यह क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: यह हुसैन और उसके साथियों का खून है, मैं इसे सुबह से इकटठा कर रहा हूँ। "रावी कहते हैं हम ने उस दिन को याद रखा तो पता चला कि उसी दिन सय्यिदना हुसैन ؓ को शहीद किया गया था।
(मुस्नद अहमद: हदीस न॰ 2165, 242/1) [مُسند احمد : حدیث نمبر 2165 ، 242/1]

❹ "यज़ीद बिन मुआविया" कुरैश के "खतरनाक लड़कों" में शामिल था

اللہ ﷻ के महबूब ﷺ की इसी ज़िम्न में चन्द सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएँ:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैराह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया:" मेरी उम्मत की बर्बादी कुरैश के चन्द नौजवानों के हाथों से होगी"। फिर बनू उमय्या के मरवान बिन हकम से सय्यिदना अबू हुरैराह ؓ ने कहा: "अगर चाहूँ तो उनके नाम भी बता सकता हूँ कि वे फलाँ फलाँ कबीले से होंगे"।

(सहीह बुखारी: हदीस न० 3605) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3605]

नोट : सय्यिदना अबू हुरैराह ؓ ने अपनी जान हिफाज़त की खातिर (और यह फर्ज भी है) कुरैश (बनू उमय्या) के नौजवानों के नाम जाहिर नहीं फरमाये थे:

(सहीह बुखारी: हदीस न० 120) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 120]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह ؓ का खुद बयान है के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना "70 की दुहाई के आगाज़(यानि 60 साल गुज़रने के बाद) से और नौउमर लड़कों की हुकूमत से اللہ ﷻ की पनाह तलब करो"|

(मुस्नद अहमद: जिल्द न० 2 सफ़्हा नंबर 326 हदीस न० 8302, मिश्कात-उल-मसाहबीह हदीस न० 3716) [مُسند احمد : جلد نمبر 2 صفحہ نمبر 326 ، حدیث نمبر 8302 ، مشکوۃ المصابیح : حدیث نمبر 3716]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह ؓ बाजार मे चलते हुए यह दुआ मांगा करते थे : "ऐ اللہ ﷻ मुझे 60 वाले साल तक बाकी ना रखना, (लोगों) तुम्हरी ख़राबी हो ! मुआविया ؓ की कनपटियाँ मज़बूती से पकड़ लो, ऐ اللہ ﷻ मुझे लड़कों की हुकूमत तक बाकी ना रखना"।

(दलैलुल नबुव्वत लिल-बयिहकी:(जिल्द न०7,सफ़्हा नंबर363 हदीस नंबर 363,हदीस नंबर2801) [دلائلُ النبوۃ لِلبیھقی : جلد نمبر 7 ، صفحہ نمبر 363 ، حدیث نمبر 2801]

नोट : सय्यिदना अबू हुरैरह ؓ को 60 हि० से पहले ही वफ़ात पा गयी, जब्कि सय्यिदना मुआविया ؓ ने 60 हि० में वफ़ात पाई और यूँ "यज़ीद" हुक्मुरान बन गया |

(तमाम कुतुब-ए-अस्मा-इल-रिजाल) [تمام کُتب اَسماءِ الرِجال]

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सफीना ؓ ने खानदान-ए-उमय्या से मुताल्लिक फरमाया : उनकी हुकूमत शदीद तरीन बादशाहत में से एक है"।

(जामे तिर्मिजी: हदीस न० 2226) [جامع ترمذی : حدیث نمبر 2226]

नोट : सय्यिदना मुआविया ؓ ने मरवान के जरीए सहाबा ؓ से "यज़ीद" के लिये बैअत मांगी तो सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र ؓ ने भी सख्त मुखालिफत फरमाई:

(सहीह बुखारी: हदीस न० 4827) [صحیح بُخاری: حدیث نمبر 4827]

"कुस्तुन्तुनियाँ" वाली बशारत "यजीद बिन मुआविया" पर चस्पाँ करना "इल्मी गलती" है

इस मौजू पर चन्द सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएँ:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कैसर के शहर (कुस्तुन्तुनियाँ की फतह) के लिये जंग करेगा उनकी मगफिरत कर दी गई है"।

(सहीह बुखारी: हदीस न० 2924) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 2924]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "अबू इमरान ताबई ؒ का बयान है: "हम कुस्तुन्तुनियाँ पर हमले के लिये रोम पहुंचे और हमारे अमीर लश्कर "अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद ؒ" थे। वहाँ सय्यिदना अबू अय्यूब अन्सारी ؓ ने हमें एक आयत की तफ्सीर समझाई फिर आप ؓ اللہ की राह में जिहाद में शरीक होते रहे और बिल आखिर कुस्तुन्तुनियाँ में दफ्न हुए"।

(सुनन अबू दाऊद: हदीस नंबर 2512) [سُنن ابی داؤد : حدیث نمبر 2512]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु अय्यूब अंसारी ؓ रोम में उसी लश्कर में फौत हुए जिसमें अमीर लश्कर "यज़ीद बिन मुआविया" था"|

(सहीह बुखारी: हदीस न० 1186) [صحیح بُخاری : حدیث نمبر 1186]

नोट : कुस्तुन्तुनियाँ पर एक से ज़्यादा हमले हुए थे और सय्यिदना अबु अय्यूब अंसारी ؓ खुद इन तमाम लश्करों में शरीक़ रहे| अब आप ؓ अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद ؒ वाले लश्कर में तो जिन्दा थे, जब्कि यज़ीद वाले लश्कर में आप ؓ (54 हि० में) फौत हुए, इस तहकीक से बिल्कुल आसान सा नतीजा निकलता है: "यज़ीद वाला लश्कर क़तन्न पहला लश्कर नहीं था, बल्कि वह तो आख़िरी लश्कर था"|

यज़ीद के ③ स्याह कारनामे

❶ जलीलुल कद्र सहाबी सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर ؓ के ख़िलाफ़ मक्का मुकर्रमा पर हमला करके "बैतुल्लाह" को आग लगा कर शहीद कर दिया:

(सहीह मुस्लिम: हदीस न० 3245) [صحیح مُسلم : حدیث نمبر 3245]

❷ "वाकिआ हर्रा" में यज़ीदी फौज ने "कत्ले आम" करके "मदीना मुनव्वरा" की हुर्मत को पामाल किया, और यूँ सहीह मुस्लिम की अहादीस की रु से اللہ ﷻ की, फरिश्तों की और तमाम इन्सानों की लाअनत "कमाई": (सहीह बुखारी: 2604, 2959, 4024, और 4906, सहीह मुस्लिम: हदीस न० 3339, 3319, 3323, से 3333)

[صحیح بُخاری : حدیث نمبر 2604، 2959 ، 4024 اور 4906 ، صحیح مُسلم : حدیث نمبر 3339 ، 3319 ، 3323 تا 3333]

नोट : इमाम अहमद बिन हंबल ؒ ने शागिर्द को "यज़ीद बिन मुआविया" से मुताल्लिक फरमाया: "वह वही है जिसने मदीने वालों के साथ वह करतूत किये जो उसने किये।" शागिर्द ने पूछा यज़ीद ने क्या किया था? फरमाया: उसने मदीने को लूटा था। उसने पूछा क्या हम यज़ीद से हदीस बयान कर सकते हैं? फरमाया: नहीं, यज़ीद से हदीस मत बयान करो, और किसी के लिये जायज नहीं कि वह यज़ीद से एक हदीस भी बयान करे। उसने पूछा जब यज़ीद ने यह हरकतें की थीं तो किस ने उसका साथ दिया था? फरमाया :अहले शाम ने" (अल-रद्द अलल मुतास्सिबुल अनीद: सफ्हा न० 40 (व सनद सहीह) [الرد علی المتعصب العنید : صفحہ نمبر 40 (وسندہ صحیح)]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** जब सय्यिदना हुसैन ؓ को शहीद किया गया तो आप ؓ का सर मुबारक (यज़ीद बिन मुआविया के चहेते गवर्नर) उबैदुल्लाह बिन जियाद इराकी (कूफी नज्दी) के सामने लाकर रखा गया तो वह (बदबख्त) आप ؓ के सर मुबारक को हाथ की छड़ी से कुरेदने लगा। यह देखकर सय्यिदना अनस बिन मालिक ؓ ने (उस खबीस को तंबीह करते हुए) फरमाया : " اللہ ﷻ की कसम! (सय्यिदना) हुसैन ؓ, (अपनी शक्लो सूरत के एतबार से) रसूलुल्लाह ﷺ के सब से ज्यादा मुशाबह थे"|(सहीह बुखारी: हदीस न० 3748,जामे तिर्मिजी: हदीस न० 3778)[صحیح بُخاری : حدیث نمبر 3748 ، جامع ترمذی : حدیث نمبر 3778]

नोट : सानहे कर्बला के बाद यज़ीद बिन मुआविया अपने कूफ़ी नज़्दी गवर्नर उबैदुल्लाह बिन जियाद को सज़ा न देने के बाईस ख़ुद भी इस ज़ुर्म में बराबर का हिस्सेदार बन गया |

(सहीह मुस्लिम: हदीस नंबर 6309) [صحیح مُسلم : حدیث نمبر 6309]

✪ **तर्जुमा सहीह हदीस:** उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि हम अहले बैअत से जो बुग्ज़ रखेगा तो اللہ ﷻ उसे ज़रूर आग में दाख़िल करेगा | ख्वा उसे हजरे असवद और मकाम-ए-इब्राहीम के दरमियान नमाज़ें पढ़ते और रोज़े रखते मौत आई हो"|

(अलमुस्तदरक लिल हाकिम: हदीस न० 4717 और 4712) [المُستدرک لِلحاکم : حدیث نمبر 4717 اور 4712]

आख़री नसीहत

सहीह बुखारी सहीह मुस्लिम के बुनयादी रावीई और मशहूर मुहद्दिस, सय्यिदना इब्राहीम नक्ही तआबी ؓ का कौल है: "अगर(बिल फ़र्ज़) मैं उन लोगों में होता जिन्होनें सय्यिदना हुसैन ؓ को क़त्ल (शहीद) किया था, फिर (क़यामत के दिन) मेरी मग्फिरत भी कर दी जाती, और मैं जन्नत में दाख़िल भी हो जाता, तो उस वक़्त (जन्नत में) रसूलुल्लाह ﷺ के पास गुज़रने से भी शर्म करता के कहीं आप ﷺ मेरी तरफ़ देख न ले (के तू दुनिया में हुसैन ؓ के क़ातिलों का हामी था !)"|

(अल मुआजमुल कबीर लील तब्रानी हदीस नंबर 2829, 112/3) [المُعجم الکبیر للطبرانی : حدیث نمبر 2829 ، 112/3]

नोट : मुकम्मल हकाइक जानने के लिए रिसर्च पेपर नंबर 5-b ज़रूर पढ़ें: